Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class III - A

'सामूहिक कविता पाठ'

विद्यालय है अच्छा

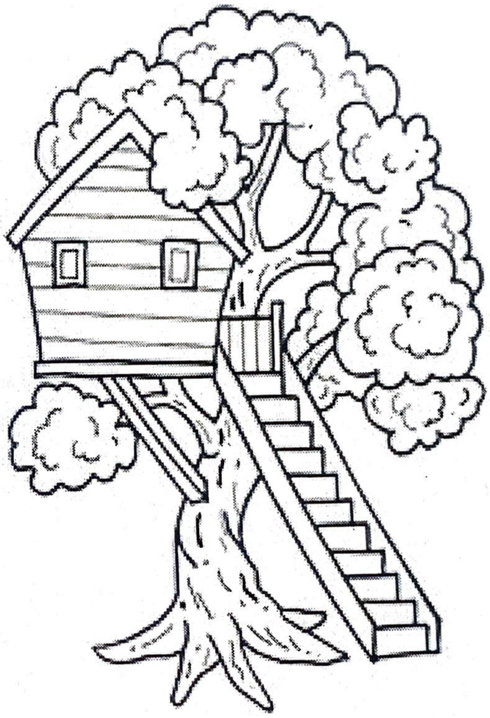

एक पेड़ पर विद्यालय हो
एक पेड़ पर खाना!

डाली-डाली पर हम बैठें
वहीं पढ़ें मिल करके
बातें करें, हँसें हम बच्चे
फूलों से खिल करके ।

बजे वहीं पढ़ने का घंटा
कोयल गाए गाना!
वहीं पास में एक नदी हो
उसके तट पर जाएँ

जब खाली हो नैया, ले लें
उसे खूब चलाएँ!
दिनभर चले वृक्ष विद्यालय
तब हो घर पर जाना!

अध्यापक भी चढ़ें पेड़ पर
कुरसी वहीं लगाएँ
जब-तब कहें कहानी,
जब तब कोई गीत सुनाएँ

पेड़ों के नीचे हम खेलें
गाएँ मौज मनाएँ!

बैठें पेड़ों के नीचे हम
वहीं लगे फिर कक्षा
जो देखेगा वही कहेगा
विद्यालय है अच्छा!

कवि : श्री प्रसाद

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: III B

नाम : ____________________

~ सामूहिक कविता पाठ ~

"जब दिन-रात बराबर होते"

घूम रही अपनी कीली पर, बिना रुके पृथ्वी दिन-रात
दिन और रात उसी से होते, और आता है रोज़ प्रभात ।
परिक्रमा करती सूरज की, बिना थके पृथ्वी अविराम
दोनों काम साथ चलते हैं, चलते रहना उसका काम ।
इसी प्रक्रिया से जन्में हैं, सरदी ,गरमी ,वसंत और बरसात
चार बड़ी ऋतुएँ होती हैं, घटते-बढ़ते हैं दिन-रात ।
सरदी में रातें बढ़ती हैं, दिन छोटा होता जाता है
गरमी में रातें घटती हैं, दिन तिल-तिल बढ़कर आता है ।
तुम्हें बताऊँ दो दिन ऐसे, जब दिन-रात बराबर होते
' इक्कीस मार्च ' और ' तेईस सितंबर '
ये दो दिन ऐसे ही होते।

समझने के लिए -

कविता में आए शब्दों के अर्थ

पृथ्वी – धरती

अविराम – लगातार

परिक्रमा – किसी चीज़ के चारों ओर घूमना

प्रक्रिया – किसी कार्य को पूरा करने का तरीका

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class III - C

पतंगों का मौसम

'सामूहिक कविता पाठ'

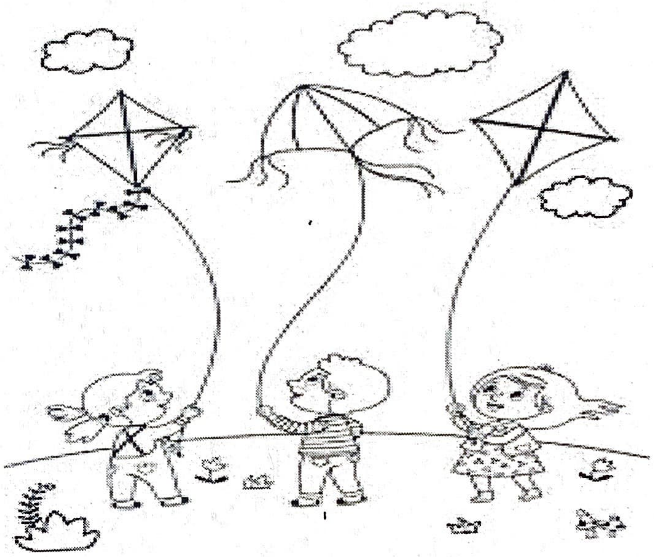

मौसम आज पतंगों का है
नभ में राज पतंगों का है
इंद्रधनुष के रंगों का है
मौसम नई उमंगों का है।

निकले सब ले डोर पतंगें
सुंदर सी चौकोर पतंगें
उड़ा रहे कर शोर पतंगें
देखो चारों ओर पतंगें।

उड़े पतंगें बस्ती-बस्ती
कोई महँगी कोई सस्ती

पर न किसी में फूटपरस्ती
उड़ा-उड़ा सब लेते मस्ती ।

चली डोर पर बैठ पतंगें
इठलाती-सी ऐंठ पतंगें
नभ में कर घुसपैठ पतंगें
करें परस्पर भेंट पतगें।

हर टोली ले खड़ी पतगें
कुछ छोटी कुछ बड़ी पतंगें
आसमान में उड़ीं पतगें
पेंच लड़ाने बढ़ीं पतंगे।

कुछ के छक्के छूट रहे हैं
कुछ के डोरे टूट रहे हैं
कुछ लंगी ले दौड़ रहे हैं
कटी पतंगे लूट रहे हैं।

कवि - शिव मृदुल

	Daly College Junior School Class:- 3D

सामूहिक कविता पाठ
कुरता चाँद का

एक बार की बात चंद्रमा , बोला अपनी माँ से -
कुरता एक नाप का मेरी, माँ मुझको सिलवा दे ।
नंगे बदन बारह मास मैं , यूँ ही फिरता रहता ।
गरमी, वर्षा, जाड़ा हरदम , बड़े कष्ट से सहता ।
माँ हँसकर बोली सिर पर रख हाथ चूमकर मुखड़ा ।
बेटा खूब समझती हूँ मैं ,तेरा सारा दुखड़ा ।
लेकिन तू तो एक नाप में , कभी नहीं रहता है ।
पूरा कभी कभी आधा , कभी बिलकुल नहीं दिखता है ।
अहा ! माँ फिर तो हर दिन की , मेरी नाप लिवा दे ।
एक नही पूरे पंद्रह तू , कुरते मुझे सिला दे ।
तब मैं बदल - बदलकर प्रतिदिन , नित्य नए पहनूँगा ।
बड़ी शान से आसमान में , माँ फिर मैं घूमूँगा ।

****